भारतीय नव-वर्ष का ऐतिहासिक महत्व

भारतीय कालगणना की वैज्ञानिकता : यदि धर्म, सम्प्रदाय या राजनीतिक प्रभावजन्य मानसिकता से ऊपर उठाकर विचार करें तो भारतीय कालगणना वैज्ञानिक आधार पर सत्य सिद्ध होती है। कालगणना यह खगोलीय गणनाओं पर आधारित तत्व है, तो काल का सम्बन्ध खगोलीय पिण्डो की गति पर आधारित है। अतः किसी व्यक्ति के जन्म-मृत्यु को ध्यान में रखकर कालगणना करने की अपेक्षा खगोल व वैज्ञानिक साक्ष्यों पर आधारित भारतीय कालगणना का व्यवहार करना उचित है।

दिनमान : पृथ्वी अपनी धुरी पर १६०० कि० मी० प्रति घण्टे की गति से घूमती। इस भ्रमण से एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के बीच पृथ्वी का पूर्वार्द्ध १३ घण्टे सूर्य के आगे रहता है। शेष १२ घण्टे पृथ्वी को उत्तरार्द्ध सूर्य के पीछे रहता है। सूर्य के आगे रहने वाले भाग को अहः (दिन) कहते है और भाग पीछे रहता है उसे रात्रि कहते है। इस प्रकार एक दिन को अहोरात्र कहते है।

युग गणना : दीर्घ कालगणना के युगों का मापदण्ड निश्चित हुआ। जब सभी ग्रह एक ही राषि में एकत्रित होते है तब युग आरम्भ होता है। इस क्रिया में चार लाख बत्तीस हजार वर्श लगते है। एक ऐसी युति को कलयुग कहा गया, दो युति को द्वापर तीन बार होने पर त्रेता और चार बार होने पर सतयुग माना गया, और चारो युगों को मिलाकर एक चतुर्युगी मानी गयी। इसका माप ४३,२०,००० वर्श है। ऐसे ७१ चतुर्युगी पर एक मन्वन्तर और १४ मन्वन्तर का एक कल्प या ब्रहा का एक दिन माना गया। जितना बड़ा दिन उतनी बड़ी रात। ऐसी अहरोत्र पक्ष, मास, वर्श के अनुसार ब्रहाण्ड की आयु ३१,१०,४०,००,००,००,००,०० वर्श है।

विभिन्न प्रचलित संवत् : इस प्रकार भारतीय कालगणना युगों से चली आ रही है। काल की गणना खगोल पिण्डो की गति से सम्बन्धित रही है। इस काल प्रवाह में अनेक विशिष्ट पुरुश अवतरित हुए। अनेक एतिहासीक घटनाऐं हुई उनके स्मरण को स्थायी करते हुए करने हेतु उस समय से वर्श प्रतिप्रदा के समय संवत् का नाम रखने का प्रचलन चला। अतः हमारे यहाँ अनेक संवत् प्रचलित है।

कल्पाब्द- १,९७,२९,४९,१२१/ सृष्टि संवत - १, ९५, ५८, ८५, १२० श्रीकृष्णसंवत-५१४५, युद्धिष्ठिर संवत- ५१२०, महावीर संवत- २५७५, शंकराचार्यसंवत - २२९५, विक्रमसंवत- २०७५ शकसंवत- १९७०।

नव-वर्ष स्वागत हेतु किये जाने वाले प्रेरणादायी कार्य

१. १०० से अधिक लोगो को नव वर्ष डे भेजने के लिए तैयार करना।
२. मातृभाशा में संवाद करने के लिए लोगो को संकल्प कराना।
३. नव रात्र के ६ दिन व्रत रखने के लिए लोगो को संकल्प करना।
४. ऊँ अंकित पताका तैयार करना-१००.....५००.....१०००।
५. बैनरो की संख्या ..... अपने क्षेत्र में कितने..... लोगो के माध्यम से।
६. किसी चौराहे पर तिलक लगाकर नव-वर्ष स्वागत का जिम्मा लेना।
७. नव-वर्श कार्ड संख्या..... अपने क्षेत्र में कितने..... लोगो के माध्यम से।
८. काल गणना के बारे में जानकारी देंगे १०,२०,५० लोगो को।
९. संपर्कित व्यापार मण्डलो का नाम.....जहाँ नव-वर्ष का आयोजन हो-
१०. वृक्षा रोपण के लिए कितने लोगो को तैयार कर सकते है।.....
११. अपने पास के चौराहे को झालर आदि सेसजाने एवं देशभक्ति गीत-
१२. हिन्दू कालगणना पर किस .....पत्रिका में लेखन करवा सकते है।
१३. हिन्दू जीवन दर्शन को पढ़ने - समझने अपनाने के लिए सहमत करना-
१४. नव-वर्श के दिन सूर्य अर्ध्यदान के लिए लोगो को जगाकर ले जाना-
१५. नव-वर्श' मंगलमय' का स्टिकर छपवाना-१०००,५०००,१००००।
१६. नव-वर्श स्वागत यात्रा में भाग लेने के लिए वाहन स्वामियों से सम्पर्क।
१७. काल गणना की वैज्ञानिकता का पत्रक छपवाकर बटवाना-५०००,१०,०००।
१८. नशा उन्मूलन के लिए प्रयत्न करना, नशा छोड़ने का संकल्प दिलवाना।
१९. कितने विघालयो में नव-वर्ष के कार्य मे करवा सकते है.....
२०. नव-वर्श पर समाचार पत्रो में विज्ञापन देने वालों को प्रेरित करना।
२१. नव-वर्ष पर घर-घर ५ दीप जलवाना एवं घर को सजवाना-
२२. नव-वर्ष की पूर्व संख्या पर घण्टा-घडियाल बजाने के लिए सहमत करना-
२३. नव-वर्ष पर चैता गायको को तैयार करना-
२४. किसी एक गॉव 'विशेश' कर अपने गॉव में नव वर्श मनवाना।
२५. आपके कहने से नव-वर्श कार्य मे आयोजित कराने वालो का नाम-
२६. हिन्दु तिथि वाली डायरी..... कैलेण्डर.....वंदनवारकृक्रय करना।

कार्यक्रम एवं आमंत्रण

'विरोधकृत' सवंत्सर
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
सांस्कृतिक भजन संध्या तथा 'नव चैतन्य' स्मारिका एवं 'पंचांग' का लोकार्पण
स्थान : श्री खाटू श्याम मंदिर वीरवल साहनी मार्ग, न्यू हैदराबाद, लखनऊ
दिनांक : १८ मार्च २०१८ रविवार सायं ७:०० बजे

नववर्ष चेतना समिति

बी-१/४१, सेक्टर-ए (नावेल्टी सिनेमा के पास), कपूरथला, अलीगंज, लखनऊ- २२६०२४
मो०नं० : ९४१५४६४७७७, ९४१५१०६७४८, ९४५२२०६३४६
ई-मेल: sun_sgpgi@yahoo.com, girishguptadr@gmail.com, vivekmisra99@gmail.com